Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

नागार्जुन के काव्य में अभिव्यक्त लोकधर्मिता

Smt. Sheel*

Assistant Professor in Hindi, Government Schools in Safidon, Haryana

***सार** – नागार्जुन (30 जून 1911[a]-5 नवम्बर 1988) हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली संस्कृत एवं बाङ्ला में मौलिक रचनाएँ भी कीं तथा संस्कृत, मैथिली एवं बाङ्ला से अनुवाद कार्य भी किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नागार्जुन ने मैथिली में यात्री उपनाम से लिखा तथा यह उपनाम उनके मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र के साथ मिलकर एकमेक हो गया।*

----------------------------------x----------------------------------

नागार्जुन का सम्पूर्ण काव्य लोकध£मता के गुणों से ओत-प्रोत है। लोक धा£मता ही वास्तव में साहित्य को कालजयी बनाती है। 'युगधारा,' 'सतरंगे पंखोवाली' आदि काव्य-संग्रह की लगभग कविताएँ ग्रामीण-परिवेश लिये हुए है। इन संग्रहों में संकलित कविताओं में ग्रामीण जन जीवन, परिवेश और संस्कृति का यथाथ चित्रण मिलता है। नागार्जुन की कविताएँ लोक में विस्तार पाते हुए घोषणा करती है-

> 'दिल ने कहा-दलित-माँओं के
>
> बच्चे अब बागी होगें।(युगधारा, नागार्जुन,पृ035)

उपर्युक्त उद्धरण में हाशिये में रहने वाले समाज की गहरी चिंता और बौखलाहट अभिव्यक्त हुई है।

'सिंदूर तिलकित भाल और लालभवानी कविता पाठकों की जबान पर मुहावरें की तरह चढ़ी हुई हैं-

> खेत हमारे,
>
> भूमि हमारी,
>
> सारा देश है हमारा।
>
> जिनका जागर उनकी धरती!
>
> यही बस एक नारा है,
>
> होशियार, कुछ न दूर लाल सवेरा आने में,
>
> प्रकट हुई है लाल भवानी सुना है तेलगांने में (युगधार, लाल भवानी, पृ.-48)

नागार्जुन के अन्दर एक गंवई किसान हमेशा बना रहा है और वह अपने क्षेत्र की फसलों, ऋतुओं और प्रकृति से प्रदेश में रहकर भी हमेशा याद करता रहा है-

> याद आता मुझे अपना वह 'तरउनी' ग्राम,
>
> याद आती लीचियां, वे आम,
>
> याद आते मुझे मिथिला के रूचिर भू-भाग,
>
> याद आते धान, याद आते कमल,
>
> कुमुदिनी और तालमखान,
>
> याद आते शस्य-श्यामल जनपदों के
>
> रूप-गुण अनुसार ही रक्खे गये वे नाम,
>
> याद आते वेणुवन वे नीलिमा के निलय, अतिराम।
>
> (सिंदूर तिलकित भाल, नागार्जुन)

नागार्जुन का स्थान हिन्दी काव्य में एक क्रांतिकारी कवि का रहा है। वे हमेशा सर्वहारा वर्ग की आवाज बुलंद करते रहे और प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। उनका सम्पूर्ण काव्य प्रगतिवाद के चेतना पर आधािित है। इनकी कविताओं में कल्पना लोक के स्थान पर लोक-जीवन के यर्थाथ जीवन का प्रकाश अधिक मिलेगा; इनके काव्य में निरन्तर अभावों और कठिनाइयों का

www.ignited.in

सामना करते हुए समाज के दुःखी एवं अभावग्रस्त लोगों के जीवन को सुधारने के प्रयास अधिक मिलेंगे। इस संर्दभ में डॉ. विश्म्भर मानव का मानना है कि-'व्यक्तिग दुख पर न रूककर वे बार-बार व्यापक दुख पर प्रकाश डालते हैं और यह सच्चे कवि की पहचान है। अतः धरती जनता और श्रम के गति गाने वाले इस युग के सम्वेदनशील कवियों में नागार्जुन का नाम सदैव अमर रहेगा।' ;

(हिन्दी के प्रतिनिधि कवि, डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, पृ.257,258)

नागार्जुन के काव्य में ग्रामीण समाज की परिस्थिति पर तीखा व्यंग्य स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है। सामाजिक रूढ़ियों पर किये गये व्यंग्य बड़े मर्मस्पर्शी और तीखे होते हैं-

जमींदार हैं साहूकार हैं, बनियां है, व्यापारी हैं,

अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दर धारी हैं,

सब घुस आये भर पड़ा है भारत माता का मन्दिर,

एक बार जो फिसलों अगुला फिसल रहे है फिर-फिर (हिन्दी के प्रतिनिधि कवि, डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, पृ. 257-258)

उपर्युक्त पंक्तियों में हृदय-स्पर्शी व्यंग्य है, ऐसी ही भारत माता से प्यार करने वाले थे कवि नागार्जुन। उनका मानना था कि जब तक देश में आर्थिक असमानता रहेगी तब तक इस असंतुलित समाज में न्याय की स्थापना नहीं हो सकती। नागार्जुन ऐसे आदमी के कवि हैं जिस अर्थ में प्रेमचन्द आम आदमी के लेखक हैं।

नागार्जुन लोक और आम जनता के कवि हैं। इनके काव्य में लोक चित्रण अमूर्त न होकर मू£तमान और सगुण मिलता है। नगर गाँव सभी इनके काव्य की परिधि में रहे हैं और इन सभी को उन्होंने देखा है। भोगा है और वे मन, वचन और कर्म से लोक सम£पत रहे हैं। उन्होंने आम जन की व्यथा, किसानों का कष्ट और देश में हुए दंगों को बड़े कष्ट के साथ देखा और झेला है।

दुनिया उनको प्रणाम करती है, जिन्होंने यश प्राप्त किया किन्तु नागार्जुन उन सभी को भी प्रणाम करते हैं, जिन्होंने कोशिश तो की पर स्थापित नहीं हो पाये-

'जो नहीं हो सके पूर्ण काम,

मैं उनको करता हूँ प्रणाम!

एकाकी और अकिचन हो,

जो भू परिक्रमा को निकले,

उनको प्रणाम! (उनको प्रणाम, नागार्जुन)।

जिन व्यक्तियों ने उग्र साधना की कठोर तपस्या करी; किन्तु समाज ने और नियति ने उनको चूर-चूर कर दिया। कवि उनको भी प्रणाम करना चाहता है-

'जिनकी सेवाऐं अतुलनीय,

पर विज्ञान से रहे दूर, प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके,

कर दिए मनोरथ चूर-चूर

उनको प्रणाम (उनको प्रणाम, नागार्जुन)।

नागार्जुन ने अपने काव्य में ग्रामीण समाज की आ£थक विपन्नता का यथार्थ चित्रण किया है। किसान या निम्न वर्ग के हालात जब अधिक खराब हो जाते हैं, तब कोई प्राकृतिक आपदा आती है। या अकाल पड़ता है। 'अकाल और उसके बाद कविता में कवि ने इसी प्रकार की मा£मक अभिव्यक्ति दी है-

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास,

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गस्त,

कई दिनों तक चूहों की हालत भी रही शिकस्त(अकाल और उसके बादद्ध नागार्जुन।

अकाल का प्रभाव कम होने पर, बदनते हुए परिदृश्य का चित्रण शायद ही किसी कविता में मिले-

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद,

धुंआ उठा आंगन के ऊपर कई दिनों के बाद,

चमक उठीं घर भर की आंखें कई दिनों के बाद

(अकाल और उसके बाद, नागार्जुन)।

ग्रामीण जीवन की भूखभरी, गरीबी और बेरोजगारी को देखकर नागार्जुन तड़फ उठते हैं-

देश हमारा भूखा-नंगा, घायल है, बेकारी से।

मिले न रोजी-रोटी भटके दर-दर बने भिखारी से।

स्वाभिमान सम्मान कहाँ है, होली है इंसान की (हिन्दी के प्रतिनिधि कवि, डॉ. विजय प्रकाश, पृ.259)।

नागार्जुन की एक कविता है 'प्रेत का ब्यान' यह कविता व्यंग्य का उत्तम उदाहरण है, जिसमें आ£थक विषमता और सरकार पर करारा व्यंग्य मिलता है। अर्थाभाव के कारण पेंचिश की बिमारी का उपचार न कराने के कारण वह मर जाता है और यमराज के दरबार में उसके और यमराज के संवाद व्यंग्य उत्पन्न करते हैं-

'आ रे प्रेत,

कड़क कर बोले नरक के स्वामी यमराज

सच-सच बतला,

कैसे मरा तू?

भूख से? अकाल से?

सुनिये महाराज,

तनिक भी पीर नहीं,

सरलता पूर्वक निकले थे प्राण,

सह न सकी आँत पेचिश का हमला(युगधारा, प्रेतकाव्यान, नागार्जुन, पृ.42)

निष्कर्ष-नागार्जुन की कविताओं का भाव देश प्रेम मानवता, सामाजिक न्याय, शोषित वर्ग के प्रति करूणा, शोषक वर्ग का विरोध रहा है। प्रसिद्ध कहानी लेखक उदय प्रकाश ने सही कहा है-'बाबा नागार्जुन की रचनाओं के प्रमाणों से अपने देश और समाज के कई दशकों के इतिहास का पुनः लेखन कर सकते हैं।' (ब्लॉग)।

लोक-जीवन के यर्थाथ से अवगत कराने के लिए उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मार्क्सवाद और आधुनिक हिंदी कविता – जगदीश्वर चतुर्वेदी

2. प्रगतिवादी हिंदी साहित्य — डॉ. कृष्ण लाल "हंस"

3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – दच्चन सिंह

4. नागार्जुन – कवि और कथाकार – सत्यनारायण

5. सामाजिक चेतना के निर्भय कवि बाबा नागार्जुन – डॉ. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर जी का आलेख

6. डॉ. रूपचंद्र शास्त्री मयंक जी के ब्लॉग पर प्रकाशित बाबानागार्जुन से सम्बंधित उनके संस्मरण

Corresponding Author

Smt. Sheel*

Assistant Professor in Hindi, Government Schools in Safidon, Haryana